अखिल भारतीय काव्यधारा

रामपुर, उत्तर प्रदेश

मासिक ई पत्रिका

वर्ष :3 अंक :4 माह: अप्रैल 2020

कोरोना विशेषांक

जितेन्द्र कमल आनंद
प्रधान संपादक

अखिल भारतीय काव्यधारा
संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

जितेन्द्र कमल आनंद

संयुक्त संपादक

राम किशोर वर्मा

पुष्पा जोशी प्राकाम्य

रागिनी गर्ग

समीक्षक

डॉ महेश मधुकर

छाया सक्सेना प्रभु

राजीव प्रखर

चित्रांकन

शोभित

प्रकाशक

आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा

मंगल भवन, साईं मंदिर के पास,
साईं विहार कॉलोनी
रामपुर-244901, उत्तर प्रदेश
7017711018

अनुक्रमणिका

क्रमांक		पेज
	सम्पादकीय	5
1	राजबाला धैर्य	6
2	रागिनी गर्ग	7
3	आनंद पाठक	8-9
4	जितेन्द्र कमल आनंद	10-11
5	रामकिशोर वर्मा	12-13
6	राकेश कुमार मिश्रा	14
7	रवि रश्मि 'अनुभूति '	15
8	हरीश बिष्ट	16
9	पुष्पाशर्मा "कुसुम"	17
10	डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'	18
11	डा. मीना कौशल 'प्रियदर्शिनी'	19
12	मीनाक्षी ठाकुर	19
13	डॉ शेषपालसिंह 'शेष'	20
14	पुष्पा जोशी 'प्राकाम्य'	21, 43-44
15	मोनिका "मासूम"	22, 48
16	डॉ राकेश चक्र	23
17	कृष्णलता (कृष्णा)	24
18	डॉ. बी. के. चन्द्रसखी	25
19	नयना कक्कड़ कपूर	26
20	डॉ रीता सिंह	27
21	सुबोध कुमार शर्मा शेरकोटी	28
22	डा० भारती वर्मा बौड़ाई	29

23	डॉ. अरविंद "धवल"	30
24	रूचिका राय	31
25	शोभित	32
26	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	33
27	सुलोचना परमार उत्तरांचली	34-35
28	डॉ महेश मधुकर	36
29	सत्य पाल सिंह 'सजग'	37
30	आशा बाजपेयी 'संभवी'	38
31	राजीव 'प्रखर'	39
32	डॉ. शशि जोशी "शशी"	40
33	छाया सक्सेना प्रभु	41-42
34	हेमा	45
35	डॉ अर्चना गुप्ता	45
36	उपमेन्द्र सक्सेना	46
37	अखिलेश वर्मा	47
38	विकल बहराइची	49
	अखिल भारतीय काव्यधारा के रचनाकारों के छायाचित्र	50-51

सम्पादकीय

आज लगभग सम्पूर्ण विश्व कोरोना वायरस से जूझ रहा है । ऐसे भीषण हालात सम्भवतया सौ वर्ष पूर्व हुए होंगे । कभी प्लेग जैसे भयंकर हालात से भी दुनिया ग्रस्त रही है। वर्तमान में चीन की गलती आज विश्व को भुगतनी पड़ रही है। इस भयंकर वायरस को अमेरिका, स्पेन, फ्रांस आदि देश भी झेल नहीं पा रहे हैं। भारत ने फिर भी सम्पूर्ण देश में लाकडाउन कर कोरोना पर नियंत्रण कर रखा है। ऐसे में ईश्वर से प्रार्थना के साथ ही सावधानी पूर्वक अपने -अपने घरों में अथवा जो जहाँ है, वह वहीं ठहर कर इस वायरस से प्रभावित होने से बच सकते हैं ।

चैत्र नवरात्रि उपवास में सभी को यही उचित है कि घर में ही रहकर ईश्वर से प्रार्थना करें । आप सभी से सावधान, सचेत रहने की अपेक्षा की जाती है। सभी को हार्दिक शुभकामनायें, सभी स्वस्थ और प्रसन्न रहें ।

घर में रहकर ही जो समयोचित सार्थक एवं रचनात्मक कार्य किये जा सकते हैं, करें ; व्यस्तता में समय सहजता से गुजरते देर नहीं लगेगी।

आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा रामपुर (उ प्र) द्वारा प्रकाशित यह मासिक ई पत्रिका : "**अखिल भारतीय काव्यधारा**" का **अप्रैल -2020** अंक **कोरोना विशेषांक** के रूप में सम्बंधित साहित्यिक सामग्री के साथ प्रस्तुत है; आपको यह अंक कैसा लगा, लिखना न भूलें।

दिनांक: 30-03-2020

जितेन्द्र कमल आनंद
प्रधान संपादक
मंगल भवन, साईं मंदिर के पास
साईं विहार कॉलोनी,
रामपुर – 244901, उत्तर प्रदेश
7017711018

राजबाला धैर्य

पानी है अनमोल
गैस रूप में कभी है मिलता
बनके बर्फ कभी है जमता
द्रव्य रूप में रहता बहता
फीका कहीं नमक सा रहता
जीवन देता पानी है अनमोल।
बड़ा जरूरी पानी है अनमोल।
नदियों में है चलता जाता
झील,ताल में थम सा जाता
हर प्यासे की प्यास बुझाता
सबका जीवन यही बचाता
जीवन देता,पानी है अनमोल।
बड़ा जरूरी,पानी है अनमोल।
बिन पानी न बने रसोई
इसने चादर मल - मल धोई
इसकी चाह करे हर कोई
पानी बिन है दुनिया रोई
जीवन देता पानी है अनमोल
बड़ा जरूरी पानी है अनमोल
प्यासी धरती मांगे पानी
जीवन में है अमृत पानी
सांसों का आधार है पानी
पानी की है अजब कहानी
जीवन देता पानी है अनमोल
बड़ा जरूरी पानी है अनमोल
इसको तुम न व्यर्थ बहाओ
जल का संकट नहीं बढ़ाओ
संचय जल का बहुत जरूरी
जीवन का अस्तित्व बचाओ
जीवन देता पानी है अनमोल।
बड़ा जरूरी पानी है अनमोल।

राजबाला धैर्य
बरेली (उत्तर प्रदेश)

रागिनी गर्ग

दोहागीत

'कोरोना' की मार से, दुनिया सारी त्रस्त।
घर में खुद को बन्दकर,कर दो इसको पस्त।।

बदली -बदली है हवा,बदल गये हैं लोग।
मिलने से डरने लगे,कैसा आया रोग?
छीन रहा है श्वाँस ये,ऐसा करे प्रहार।
खत्म सृष्टि होने लगी,बतलाती उपचार।।
साफ -सफाई तुम रखो,साबुन से धो हस्त।
घर में खुद को बन्दकर,कर दो इसको पस्त।।

कोहराम संसार में,मचा हुआ चहुँ ओर।
'कोरोना'से कट रही, मानव-जीवन डोर।।
राक्षस आया, चीन से, हरने सबके प्रान।
अपना लोगे स्वच्छता,बच जायेगी जान।।
दूरी सामाजिक रखो,हो जायेगा ध्वस्त।
घर में खुद को बन्दकर,कर दो इसको पस्त।।

संयम से सब काम लें,विपदा होगी दूर।
'कोरोना' को मात दे, होगा सुख भरपूर।।
जीतेगी फिर जिन्दगी, इसकी होगी हार।
भीड़-भाड़ में मत घुसो,करता है ये वार।।
जनता का कर्फ्यू लगा, मात दी जबर्दस्त
घर में खुद को बन्दकर,कर दो इसको पस्त।।

रागिनी गर्ग
रामपुर (उत्तर प्रदेश)

आनंद पाठक

एक नज़र का जो उतरा चाकू मुझमें
फिर न रहा दिल पर मेरा काबू मुझमें।

वो अब तक है मुझसे रूठा रूठा सा
कहता था जो, कोई है जादू मुझमें।

शायद उसको मुझसे थी उम्मीद बहुत
ढूँढ रहा था वो अपना बाजू मुझमें।

उसमें तो है जन्नत वाली इक ख़ुशबू
और जहन्नुम वाली है बदबू मुझमें।

इक अर्से से सोच रहा हूँ मैं यूँ ही
कौन रहा करता है बेक़ाबू मुझमें।

मैं भी तो महसूस करूँ ये दर्द तिरा
एक घड़ी को आके बस जा तू मुझमें।

रखना चाहूँ जब मैं कलम अपना पाठक
एक सुखनवर करता है "हा हू" मुझमें।

आनंद पाठक

नज़र न जाने लगी कैसी इन बलाओं की
समझ न चाल सके हम हसीं फ़िज़ाओं की।

सफ़ीना जाके उसी ठौर था मिरा डूबा
जहाँ कमी न थी क़िस्मत से नाख़ुदाओं की।

ये शोहरतें ये बुलन्दी जो मिल रहीं मुझको
ये अज़मतें हैं मिरी माँ की सब दुआओं की।

करोगे इश्क़ तो ये भी पता चलेगा फिर
गिरफ़्त होती बड़ी है मियाँ अदाओं की।

ये कैसा रोग़ जमाने में आ गया देखो
ज़रूरतें हैं बहुत अब यहाँ दवाओं की।

नया सितम ये सितमगर का देखिये साहिब
लगा रहे हैं वो बोली मिरी सदाओं की।

मिरे बजूद पे उंगली जो उठ रहीं पाठक
ये साज़िशें हैं मिरे साथ कुछ हवाओं की।

आनंद पाठक
बरेली (उत्तर प्रदेश)
9557606700, 7017654822

जितेन्द्र कमल आनंद

कोरोना

करोना विषयक दोहे, देखभाल की बात ।
करते हैं ये आपसे, दिल से दिल की बात ।।1।।

छेड़-छाड़ करिये नहीं, दें कुदरत का साथ ।
करिये निज कर्तव्य भी, धरें हाथ, मत हाथ ।।2।।

जनता कर्फ्यू ने दिया, जनता हित में साथ ।
शंख बजे,कर थाल भी, ले हाथों में हाथ ।।3।।

अति का भला न छींकना, अधिक नहीं सम्पर्क ।
कार्य करें अनिवार्य ही, करें न तर्क- वितर्क ।।4।।

राशन-दालें,दूध-घी, शकर-नमक दिन-रात ।
इतना ही संचित करें, जितना हो पर्याप्त ।।5।।

जितेन्द्र कमल आनंद
रामपुर (उत्तर प्रदेश)

अति का भला न छींकना, अधिक नहीं सम्पर्क ।
छींके धर रूमाल को, करें न तर्क- कुतर्क।।

जितेन्द्र कमल आनंद
रामपुर (उत्तर प्रदेश)

कुण्डलिया

घबड़ाहट बिल्कुल नहीं, चिंता करें न आप ।
देखभाल करिये अधिक,पूरा करिये चाप।
पूरा करिये चाप,वृत्त पूरा हो जाये।
जीवन हो खुशहाल,सभी का मन हरषाये।
कहे कमल कविराय,नहीं घबड़ाहट बिल्कुल।
रहे आपको उचित, धैर्य हो हर्षित कवि-कुल।।

जितेन्द्र कमल आनंद

ग़ज़ल

2122, 2122, 2122, 212

मुद्दतों के बाद पहचाना मुझे है, आपने!
लुट रहीं खुशियाँ ये, आया आज जब मैं सामने।।

खूबसूरत इश्क है यह, ज़िंदगी है रूबरू ।
क्या कहूं क्या खूब कर डाला नशा है जाम ने।।

शब्द तब हमने उकेरे कह ग़ज़ल यह प्यार से।
क्या न कर डाला है जादू आपके बस नाम ने ।।

क्या विरह के क्या मिलन के तूलिका ने रंग भर,
संग क्या-क्या रँग दिखाया लेखनी के काम ने ।।

हम मिज़ाजी हैं नहीं तुम हक़ीक़ी हो ,सनम !
कह रहा अब तो 'कमल' तुमसे मिलाया राम ने ।।

जितेन्द्र कमल आनंद
रामपुर उ प्र भारत

रामकिशोर वर्मा

कोरोना संकेत

कोरोना संकेत है , समझो मेरे यार।
अहंकार में जो भरे , दिखते सब लाचार ।।

महामारी व बाढ़ भी , आबादी के खेल ।
कोरोना भी कर रहा, देखो इनसे मेल ।।

जनसंख्या सिद्धांत भी , आया मुझको याद ।
कोरोना ने आन कर , निबटाये यह वाद ।।

कोरोना ने कर दिया , हम सब को अब एक ।
हाथ जोड़ कर सब हँसे , भारत पद्धति नेक ।।

अब भी यदि समझे नहीं, कब समझोगे देख ।
जगतपिता ने पढ़ लिया , सारे जग का लेख ।।

राम किशोर वर्मा
जयपुर (राजस्थान)

कोरोना को समर्पित दोहे

कोरोना जी आप तो, निकले बहुत महान ।
जन्म आपका चीन में, छाये सकल जहान ।।१।।

कोरोना जी आप पर, बहुत कसे हैं तंज ।
पर कितने बेशर्म हो, तनिक नहीं है रंज ।।२।।

तेज धार से कलम की, बचा नहीं है कोय ।
हद कर दी है आपने, इज्ज़त दी है खोय ।।३।।

भागोगे अब कब तलक, कोरोना जी आप ।
गिनती उल्टी शुरु हुई, कर लो प्रभु का जाप ।।४।।

कल ही तो पीकर चुके, जीवन की दो बूँद ।
अब कोरोना आनकर, सभी दिये हैं खूँद ।।५।।

जनता का कर्फ्यू लगा, जनता का हित साध ।
कोरोना यों नष्ट हो, मिट जाएगी गाध ।।६।।

हाथ जोड़ कर ही मिलें, बना रहेगा नूर ।
अगर हाथ साबुन धुले, कोरोना हो दूर ।।७।।

भूल गये हम बात जो, वह है बहुत महान ।
घर-घर में अब यज्ञ हो, हो सकता कल्याण ।।८।।

राम किशोर वर्मा
जयपुर (राजस्थान)
मोबाइल नं० 8433108801

राकेश कुमार मिश्रा

जादू मन्तर

एक कतरे को समन्दर कर दिया
एक कतरे में समन्दर कर दिया

कितना अनोखा है वो जादूगर
एक पल में जादू मन्तर कर दिया

जा रहा था भीख माँगते हुये
देख लो उस को सिकन्दर कर दिया

तोड़ दिया गरूर आफताब का
पल में बादल के अन्दर कर दिया

क्यों ढूढ़ता उसे दैरो हरम
जब तेरे दिल को मन्दर कर दिया

चाँदनी रात के दिलकश नजारे
देख 'राकेश' कैसा मन्जर कर दिया

राकेश कुमार मिश्रा

रवि रश्मि 'अनुभूति '

कोरोना
कुण्डलिया छंद

कोरोना से डर नहीं , नहीं भीड़ से काम ।
कोरोना से बच रहो , लेना प्रभु का नाम ।।
लेना प्रभु का नाम , कष्ट हो दूर तुम्हारे ।
घर के अंदर रहो , दूर कर अपने द्वारे ।।
छूना कुछ हो अगर , रगड़ हाथों को धोना ।
जो अब छुए मज़ाल , लगे न कभी कोरोना ।।

सेवा का दिन आज है , सेवा का कर काज ।
मेवा मन भर ही मिले , पहनो सिर पर ताज ।।
पहनो सिर पर ताज , डरा न सके कोरोना ।
नियम निबाहो रोज़ , पड़े न तुमको रोना ।।
सबको देना सीख , बचाएँगे प्रभु देवा ।
जितना संभव आज , करो अब मानव सेवा ।।

रवि रश्मि 'अनुभूति'
9920796787

हरीश बिष्ट

कोरोना
रोला

कोरोना की मार , डरें सब सोते जागे ।
शहरों को सब छोड़ , गाँव को अपने भागे ।।
डरने की क्या बात , वक्त से सीखें लड़ना ।
कोरोना पर आज , हमें है भारी पड़ना ।।

संकट का है दौर , नहीं हमको घबराना ।
कोरोना है नाम , हमें यह रोग भगाना ।।
रखना अपना ध्यान , नहीं तुम इससे डरना ।
घर में रहकर आज , इसे है बाहर करना ।।

मिलकर के हम आज, पड़े सब इस पर भारी ।
चलो करें आगाज , बने न यह महामारी ।।
कुछ पल छोड़ें साथ , कभी कमजोर न पड़ना ।
जीवन की है बात , हमें है इससे लड़ना ।

हरीश बिष्ट
रानीखेत (उत्तराखण्ड)

पुष्पाशर्मा "कुसुम"

दोहा

आया है तो जायगा,
मन में रखिए धीर।
कोरोना से लड़ रहे,
भारत के रणवीर।।

साधन सब अपनाइये,
जिनसे होय बचाव।
खान पान की सादगी,
आयुर्वेद सुझाव।।

कालयवन बन आ गया,
कोरोना इस बार।
युक्ति रचें मन मोहना,
त्राण मिले संसार।।

माया फैली दानवी,
कोरोना है अस्त्र।
मायापति माधव हरें,
चला सुदर्शन शस्त्र ।।

शरण लीन्ह गोविंद की,
और न दूजी आस।
धूप, हवन, जप आरती,
साधन रख विश्वास।।

पुष्पाशर्मा "कुसुम"

डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'

बचिएगा कोरोना से,औरों को भी बचाना।
घर में ही रहना मित्रों,बाहर कहीं न जाना।।
कोरोना,नाम की ये, आयी नयी बीमारी,
ये फैलती तेजी से, भयभीत दुनिया सारी,
इससे बचाव हेतु,बस करिएगा तैयारी,
हाथ धोना अपने,
और इम्युनिटी बढ़ाना।
बचिएगा कोरोना से,औरों को भी बचाना।।
खांसी, बुखार संग संग,यदि सांस की परेशानी,
हो सकता है कोरोना,ये इसकी है निशानी,
उपचार कराने में,करना न आनाकानी,
बनना न स्वयं डॉक्टर,
तुम अस्पताल जाना।
बचिएगा कोरोना से,औरों को भी बचाना।।

एक दूसरे से रहिए,दूरी जरा बनाकर,
उनसे विशेष बचिए,जो आये विदेश जाकर,
न बुलाइए किसी को,न जाओ बुलावा पाकर,
भीड़-भाड़ से अब,
दूरी तुम बनाना।
बचिएगा कोरोना से,औरों को भी बचाना।।
इससे बचें रहोगे,बस रखना सावधानी,
लेना सुपाच्य भोजन,और पीना गर्म पानी,
रखिएगा ध्यान अपना, जिंदगी स्वयं बचानी,
करिएगा बस नमस्ते,
अब हाथ न मिलाना।
बचिएगा कोरोना से,औरों को भी बचाना।।

डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'
मुहल्ला गुजरातियान, धामपुर - 246761
जिला बिजनौर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल-9719064630

कोरोना की व्याधि,बनी है प्रलयंकारी।
रक्तबीज सा पनप रहा,ये दानव भारी।।
रहता सदा अदृश्य,घात करता है छुपकर।
हैं विदेश से लोग,इसे ले आये चलकर।।
जगदम्बे संहार करो, अब कोरोना का।
है विषाक्त अति सूक्ष्म,घात जादू टोना का।।
कोरोना को अब अपना ,आहार बनाओ।
आती है नवरात्रि,अम्ब रक्षा को आओ।।

डा. मीना कौशल 'प्रियदर्शिनी'

डा. मीना कौशल 'प्रियदर्शिनी'

कुंडलियां छंद

मीनाक्षी ठाकुर

मोदी से नफरत जिन्हें ,कोरोना से प्यार,
ऐसे धरने कर रहे, लोगों को धिक्कार,
लोगों को धिक्कार, वतन से प्यार न इनको
घर से बाहर बैठ, त्रास देते हम सबको
देख काल का रूप,मनुजता भी अब रो दी,
माँगे सबका साथ , हिंद का बेटा मोदी।।

मीनाक्षी ठाकुर
मिलन विहार, मुरादाबाद

डॉ शेषपालसिंह 'शेष'

गीतिका - कोरोना वाइरस

तुरत करें संहार, नहीं हवाई रोग,
वाइरस कोरोना। चिपकता यह तन से,
देनी है ललकार, कर देता बीमार,
वाइरस कोरोना। वाइरस कोरोना।

परेशान है विश्व, निर्मलता अभियान,
बुरी बीमारी से, चलायें घर - घर में,
है जलता अंगार, नष्ट करें गद्दार,
वाइरस कोरोना। वाइरस कोरोना।

बहुत पढ़ा विज्ञान, जागरूक सब रहें,
दिमागी यत्न करें, परस्पर नहीं छुएँ,
देना है दुत्कार, जल्दी विष दें मार,
वाइरस कोरोना। वाइरस कोरोना।

डॉ शेषपालसिंह 'शेष'
'वाग्धाम'-11डी/ई-36डी, बालाजीनगर कालोनी, टुण्डला रोड, आगरा-282006
मोबाइल नं0 -- 9411839862

पुष्पा जोशी 'प्राकाम्य'

जय भारती

जय भारती,,,जय भारती,,,जय भारती।
देवजन-ऋषि-मुनि उतारें, भारती की आरती।
जय भारती,,,,जय भारती,,,,जय भारती।

योगस्थ और ध्यानस्थ हिममय,
श्वेतवर्णी शुभ हिमालय।
हरहराती दिव्य गंगा,
श्वेत वसना,वेद-सी लय।।
शिव जटा में जा समायी,
पुरखे भगीरथ तारती।।
जय भारती,,,जय भारती,,,,जय भारती।

इस धरा के साज उपवन,
हरित कानन,ललित मधुबन।
झिलमिलाते तारिका-गण,
गीत गाता सकल कण-कण।।
मातृ-भू की कान्ति को,
संग चन्द्रिका के निखारती।।
जय भारती,,,जय भारती,,,,जय भारती।

ज्योतिर्मयी रवि किरण प्रतिदिन,
उज्ज्वल,प्रबल होकर प्रखर।
इस सृष्टि के अस्तित्व को,
सार्थक बना होती मुखर।।
और वेद-गीता-उपनिषद,
संतों को भव से तारती।।
जय भारती,,,जय भारती,,,,जय भारती।

पर त्रस्त गंगा हो प्रदूषित,
नित मनुज के स्वार्थ से।
संग गर्जना मर्दन करे अब,
हो विमुख परमार्थ से।।
केदार जैसी त्रासदी,
झकझोर जन संहारती।।
जय भारती,,,जय भारती,,,,जय भारती।

पुष्पा जोशी 'प्राकाम्य'
शक्तिफार्म,सितारगंज

मोनिका "मासूम"

ये माना...नहीं चल सकी है किसी की
ये माना...नहीं हैसीयत आदमी की

रहा रौंध तू आसमां के दरीचे
मगर ये ज़मीं है जरूरत सभी की

समाने को खुद में हज़ारों समन्दर
बही उम्र भर बूंद प्यासी... नदी की

नहीं मोल अश्कों का कोई यहाँ पर
ज़ियादा है कीमत हंसी की, खुशी की

अंधेरों के सीने को ये चीर देगी
हुई क़ातिलाना अदा रोशनी की

ये "मासूम",होती है खत्म इक न इक दिन
बड़ी खासियत ये हर इक... बदी की

मोनिका "मासूम"

डॉ राकेश चक्र

कुछ भी मेरा नहीं है

तुम नियंता हो
अखिल सकल भ्रमाण्ड के
मेरे भी
मैं हूँ मान लेता
अज्ञान वश एक शरीर
जबकि मैं नहीं हूँ शरीर
इसीलिए दुख सुख का
करता हूँ अहसास
जबकि हूँ मैं
केवल किरायेदार
कुछ समय का

मुझे है भोगना
अपना प्रारब्ध और वर्तमान
बदल दिया जाऊँगा
वस्त्र की तरह
एक दिन
या हो जाऊँगा मुक्त
मिलकर परमात्मा में

मुझे नहीं मालूम
मैं हूँ क्या कर रहा
पाप और पुण्य
बस करता हूँ रहता
जो भी है वो कराता
अच्छा और बुरा

ये देहधारी जीवात्मा
है प्रकृति के वश में
जिसे मैं समझता रहा
अहंकार वश अपना

शरीर के नो द्वार
दो आँखें, दो कान, दो
नासिका
एक मुँह
गुदा और उपस्थ
कितना है अद्भुत
और विचित्र उसकी रचना

मैं तोड़ रहा रहा भ्रम में
करता हूँ मैं जो भी कार्य
वो मैं कर रहा हूँ
बल्कि वो प्रकृति रही करती
हूँ अपना भ्रम-संशय
मैं नहीं कर रहा
ये सब है पूर्व निर्धारित
सब कुछ है प्रकृति के
अधीन

कृष्ण हैं अर्जुन से कहते
जिस दिन कर लोगे प्रकृति
को जीवात्मा के अधीन
उस दिन जीवित रहते हुए
भी हो जाओगे मुक्त

सोच लूँगा
जब भी मैं
तभी मैं हो जाऊँगा
मुक्त और आनन्दित
मैं हूँ
पर मेरा कुछ भी नहीं है

डॉ राकेश चक्र
90 बी, शिवपुरी, मुरादाबाद 244001 उ. प्र .
9456201857, Rakeshchakra00@gmail.com

कृष्णलता (कृष्णा)

।।बेनाम सा डर।।

इक अनजान
और बेनाम सा डर,
सताता है मुझे!
भविष्य की बेखबर सी
ख़ौफनाक घटनाओं के बारे में
बताता है मुझे!!

।।मुक्तक।।

बेनाम सी ज़िन्दगी का भी,
अपना ही मज़ा है!
चाहे कोई लाख कहे,यह बहुत बुरी सज़ा है!
मेरे तो अपने भी , गैरों की संगत में थे बैठे-
सुकून है लेकिन,
अब भी मुझपे मालिक की रज़ा है!!

कृष्णलता (कृष्णा)
भीलवाड़ा (राजस्थान)
7665055166

डॉ. बी. के. चन्द्रसखी

सुप्रभात मंगलमय दिवस
एकान्तवास में हो रहा, निजता का विस्तार!
संग रहें परिवार के, दीजै सुख बौछार! 1
सुश्रुत, चरक कह गये, लंघन पर दो जोर!
व्याधि सतावे यदि तुम्हें, एकान्तवास की ओर! 2
जीवन की सत्ता रहे पकडो इसकी डोर!
सादा जीवन तब चले, सात्विक मन पर जोर! 3
साफ- सफाई जो रहे, कोई न व्याधि सताय!
पाद- हस्त प्रक्षालना, आदत जब बन जाय! 4
चन्द्रसखी दूरी रहे, आपस की जब बात!
छींकत मुंह रूमाल हो, कोई न हो अपघात! 5

डॉ. बी. के. चन्द्रसखी
वैशाली, गाजियाबाद।

नयना कक्कड़ कपूर

बीमारी ऐसी आई ,
जिसने आफत बरसाई,
इंसान को कैद किया घरों में,
पंछी को नई उड़ान दिखाई,

कोई दर्द उनका समझो ,
रोज़ कमाते रोज़ खाते,
उनके बच्चे भी घरों में,
क्यों फाँके कर जाते,

सूनी पडी रौनक बाज़ारो की,
कैसी है आफत हम पर आई,
अर्थ व्यवस्था देश की हिल बैठी,
हर तरफ बीमारी ये छाई||

नयना कक्कड़ कपूर
रामपुर, उत्तर प्रदेश

डॉ रीता सिंह

भारत माता के तीनों अमर शहीदों को समर्पित मेरी कुछ पंक्तियाँ –

राजगुरु सुखदेव भगत सिंह
आजादी के दीवाने थे ,
हँसते हँसते गए फँदे पर
वे बलिदानी मसताने थे ।

इंकलाब का नारा देकर
वो नयी चेतना लाये थे
देश प्रेम की ज्योत जलाकर
सरदार वही कहलाये थे ।

नाम शिवराम हरि राजगुरू
वेदों और ग्रन्थों के ज्ञाता ,
छापामार युद्ध शैली से
था उनका नजदीकी नाता ।

सुखदेव थापर भगत सिँह ने
संग संग दीक्षा पायी थी ,
लाजपत की हत्या के बदले
साण्डर्स की बलि चढ़ायी थी ।

साहस का पर्याय थे तीनों
भारत माँ न भूल पाएगी
ऐसे शहीदों की कुर्बानी
युग युग तक गायी जाएगी ।

डॉ रीता सिंह
चन्दौसी (सम्भल)

सुबोध कुमार शर्मा शेरकोटी

करुणा से तुम निश्चित ही कोरोना को जीतोगे
स्वहित ओ परहित चिंतन तुम उर में जब लहोगें ।
एकांतवास ओ स्वच्छता घर भर में तुम लाओ
मोदी जी का संदेश अपना कर स्वस्थ राष्ट्र बनाओ। ।

हम सबका भी पुनीत कार्य है देश हित करने का
कोरोना पीर से जो अति पीड़ित को कुछ करने का ।
अंतिम क्षण तक इस युद्ध में प्रतिभाग सदा करने का
वैरभाव मिटा उरके अब मानव हित रत सदा रहने का।।

कहना नही कुछ करना है कोरोना को हटाना है
दिखे यदि लक्षण तुम्हे नही उसे अब छिपाना है।
नमन करो जोड़ कर हाथ सबको नही मिलना है,
कुछ नियम अपना कर जनधनको ही बचाना है ।।

शासन सत्ता के अथक प्रयास अविरल किये जा रहे है
अंतर्मन चिंतन करो हम जीवन विमल किये जा रहे है।
मानव हित के महा यज्ञ में तुम भी स्व आहुति करदो
जितना कर सको मानव हित मे अविलम्ब अब करदो।।

सुबोध कुमार शर्मा शेरकोटी
गदरपुर ऊधम सिंह नगर

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

जनता कर्फ्यू

विश्व में फैल रहे
कोरोना वायरस ने
दे दिए संकेत
अपने आने के
भारत में,
चिंतित है
देश का मुखिया
ले रहा देशहित में
कड़े से कड़े निर्णय,
तभी तो आज
किया है आह्वान
"जनता कर्फ्यू" का,
रहें सुबह सात बजे से
रात के नौ बजे तक घर में
अपने लिए, अपनों के लिए
मोहल्ले/समाज और
पूरे राष्ट्र के लिए,
होगी बहुत कुछ
परेशानी भी सबको,
प्रभावित भी होगा
जनजीवन भी,पर देश के
मुखिया की
हर बात मानने को
पूरा देश तैयार दिखता है,
सड़कों पर पसरा है
दूर-दूर तक सन्नाटा
सब बैठे हैं अपने घरों में
कोरोना को परास्त करने के
लिए
सब मान रहे है बात
राष्ट्र के साथ खड़े होने के लिए,
पर हैं कुछ सिरफिरे ऐसे भी
जिन्हें नहीं है अपने राष्ट्र से
किसी भी तरह का
कोई सरोकार,
वे निकल रहे बाहर
मनमानी करने को,
नहीं है जिन्हें अहसास
कि उनके ऐसा करने से
कितना
भयावह हो सकता है सबके
लिए,
और दूसरी ओर
तैयार हैं सब उनके लिए
जो लगे हैं/खड़े हैं दिन-रात
किसी भी तरह से
किसी भी रूप में
रोगियों की सेवा में तन-मन से
नहीं हैं कम किसी तरह भी
हमारे लिए ईश्वर से,
उनका आभार प्रकट करने
हृदय से सम्मान करने
बजायेंगे थालियाँ/
तालियाँ/घंटियाँ
करेंगे शंखनाद,
खड़े हैं, खड़े रहेंगे
हर सुख/दुख की घड़ी में
मिल कर अपने राष्ट्र के साथ!

डा० भारती वर्मा बौड़ाई
देहरादून, उत्तराखंड
९७५९२५२५३७

डॉ. अरविंद "धवल"

जागो प्यारे
भला कहो कब तक सहे ,प्रकृति नित्य अपमान ।
लो उसने अब कर दिया,कोरोना सन्धान ।।

कोरोना से डर गया ,जब सारा संसार ।
याद आ गया हिन्द का,सबको शिष्टाचार ।।

हाथ मिलाना चूमना ,आलिंगन है बन्द ।
करो नमस्ते फिर करो,कोरोना से द्वंद ।।

वैक्सीन सबसे बड़ी ,जनता कर्फ्यू आज ।
शत-प्रतिशत पालन करो,रक्षित करो समाज ।।

मात्र एक दिन ही नहीं ,बचने को पर्याप्त ।
मानो सब आदेश जो,हों शासन से प्राप्त ।।

बैठे रहो न साथियो ,धरे हाथ पर हाथ ।
कोरोना से युद्ध में,जन जन का हो साथ।।

डॉ. अरविंद "धवल"
बदायूँ (उ.प्र.)
7010116584

रूचिका राय

सब मिलजुलकर घर के अंदर ही परिवार के साथ समय बिताये,
यह सबकी नैतिक जिम्मेदारी है इसका सबको भान कराये।

खतरा बड़ा है मुश्किल हमारे सामने खड़ा है,
अपने संयम साहस से इस मुश्किल को दूर भगाये।

एक दिन की क्या है बिसात अगर पड़े जरूरत कई दिन रात,
घर के अंदर ही रहने का मन मे एक संकल्प दोहराए।

देश समाज के लिए प्रार्थना करें हम,
ईश्वर के आगे नतमस्तक पड़े हम।

इस वैज्ञानिकता के युग मे भी अपनी संस्कृति का अलख जगाए।
शंख घंटी थाली ताली सिटी बजाकर हम आभार जताए।

मन से मजबूत बने हम मुश्किल में भी न घबड़ाये,
अपने कर्तव्यों का निर्वहन करें हम बस यही हम जुगत लगाये।

कोरोना को दूर भगाने के लिए चिकित्सक का आदेश अपनाएं,
ये करो ना वो करो ना उस पर पूरा अमल जताएं।

साफ सफाई का ध्यान धरे हम घर से बाहर न कदम बढ़ाएं,
असली परिक्षा की घड़ी है इससे तनिक न घबड़ाये।

रूचिका राय
सिवान (बिहार)

शोभित

अरे ओ, हैवान कोरोना!
हम भारतीयों को रोकने की
तुम कोशिश भी मत करो ना।

दुनिया पर राज करने की
चाहत अधूरी रहेगी तुम्हारी,
गर तुम भारतीयों में घुल
मिल कर फैलाते रहे बीमारी।
हम उस धरती से हैं जहां आकर
कथित महान सिकंदर भी हारा है,
तुम क्या डराओगे हमें, जब मात्र
चौदह दिन का जीवन तुम्हारा है।
अरे ओ, हैवान कोरोना!
हम भारतीयों को रोकने की
तुम कोशिश भी मत करो ना।

भले सारी ज़िन्दगी हम आपस में लड़ते रहें,
खुद ही सरकार चुनकर पूरे दिन कोसते रहें
पर दुश्मन को एक सेकंड एक इंच के लिए भी
अपने आस पास बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं हम।

ना ही काम पर जाएंगे हम, ना घर से बाहर
निकलेंगे,
अपने घर में रहकर भी,
तेरे कानों में शोर मचाएंगे हम।
नहीं देंगे तुझे कोई मौका फैलने का,
ना हाथ मिलाएंगे,
सब मिलकर तेरे ख़िलाफ़ एक मजबूत जंग
चलाएंगे हम।
अरे ओ, हैवान कोरोना!
हम भारतीयों को रोकने की
तुम कोशिश भी मत करो ना।

देश चाहे कोई चलाए, दिलों में देश बसता है,
चाहे धर्म हो अलग, अन्दर एक इंसान रहता है।
छाछ सत्तू छोड़कर भले हम सूप पर महफ़िल
जमाएं,
जब कोई महामारी आए तो हम आयुर्वेद के
नुस्खे अपनाएं।
शंखनाद तो रविवार को कर ही दिया,
तेरे खिलाफ जंग का ऐलान किए हम।
अब बचाव से आगे कदम निकालकर
तुझे देश से बाहर निकलवाएंगे हम
अरे ओ, हैवान कोरोना!
हम भारतीयों को रोकने की
तुम कोशिश भी मत करो ना।

शोभित
रामपुर, उत्तर प्रदेश
7838110755

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

भगत सिंह इंकलाब लिख गए

तेईस मार्च को, तेईस वर्ष में देश के लिए बलिदान,
क्रांतिकारियों में जिसने एक अलग बनाई पहचान।
देशभक्ति का दिए एक अनोखा और जीवट संदेश,
ऐसे वीर भगत सिंह पर हमें शत शत है अभिमान।।

बारह वर्ष में जलियांवाला कांड का हो गया प्रभाव,
सेपढ़ाई छोड़कर क्रांतिकारी का अपना लिया स्वभाव।
सेंट्रल असेम्बली में उन्होंने दोस्तों संग फेंका जब बम,
भागने का अवसर पर गिरफ्तारी का किया प्रस्ताव।।

लाला लाजपतराय की मौत का बदला ख़ूब लिया,
भगत सिंह ने सांडर्स को मौत के घाट उतार दिया।
इस हत्या में भगत सिंह सुखदेव राजगुरु को फांसी,
तेईस मार्च को तीनों ने फांसी का फंदा चूम लिया।।

भगत सिंह जैसे वीरों का भारतवासी करते सम्मान,
राष्ट्र के लिए भगत सिंह ने किया अपने को कुर्बान।
हम सब याद करें हमारे आँखों से आँसू न हैं रुकते,
ऐसे वीर सपूतों ने सदैव ही भारत की बढ़ाई शान।।

अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह में वह किए बुलंदी प्रदान,
बम धमाका कर के भाग कर न बचाए अपनी जान।
भारतीय युवाओं के लिए भगत सिंह हैं एक आदर्श,
उनके क्रांतिकारी पथ पे युवा बना सकते देश महान।।

बचपन में खेतों में जा बंदूक उपजाने की बात किए,
इंकलाब जिंदाबाद का नारा दे इतिहास में दर्ज हुए।
देशभक्ति की एक अनूठी मिसाल वह कायम कर के,
इश्क करने की उम्र में भगत सिंह इंकलाब लिख गए।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती [उत्तर प्रदेश] मोबाइल 7355309428

सुलोचना परमार उत्तरांचली

कलम आज तू कुछ तो बोल

धरती में जो अन्न उपजाए
अक्सर भूख से मरता वो ।
क्यों रहता वो दीन-हीन यहां
जब सबका पेट है भरता वो ।
क्यों अन देखी होती उसकी
तू ही तो कुछ परतें खोल
कलम आज तू कुछ तो बोल

माँ ,बाप को कोई न पूछे
स्वयं पे है अभिमान यहां ।
हैं वो केवल खाली बोतल
लुढ़के हैं वो जहां तहां ।
उनको भी तो सबक सिखा
बखिया उनकी तू दे खोल ।
कलम आज तू कुछ तो बोल

संस्कारों की होली जल रही
मेरे देश में जहां तहां ।
इस तरह से कैसे होगा
मेरे देश का भला यहां ।
अपनी भाषा में समझा तू
सबकी आँखे फिर से खोल
कलम आज तू कुछ तो बोल

तूने ही इतिहास बदले हैं
तेरे दम से आज़ाद हुए ।
फिर क्यों मौन साधा है
सपने तेरे अब क्या हुए ।
अपने दिल के दर्द को तू
खुल के आज सबसे दे बोल ।
कलम आज तू कुछ तो बोल

चीख पुकार मची है देश में
एक दूजे की जान से खेलें
दिल हैं खिलौने इनके देखो
एक दूजे के दिल से खेलें ।
क्यों होते हैं कत्ल यहां पर
तू भी तो कुछ रहस्य खोल ।
कलम आज तू कुछ तो बोल

सुलोचना परमार उत्तरांचली
देहरादून (उत्तराखण्ड)

दिल के तार

जब से हुई है मुहब्बत उनसे
दिल के तार स्वयं बजते हैं।
कभी है पायल की रुनझुन तो
कभी अरमान मचलते हैं।

नयनों की चितवन से उनके
हम मन्द मन्द मुस्काये हैं।
रुख़सार पे लटकी जो लट है
सौ सौ बल वो खाये है ।

जब से हुई है मुहब्बत उनसे
दिल के तार स्वयं बजते हैं।
कभी है पायल की रुनझुन तो
कभी अरमान मचलते हैं।

नयनों की चितवन से उनके
हम मन्द मन्द मुस्काये हैं।
रुख़सार पे लटकी जो लट है
सौ सौ बल वो खाये है ।

स्वप्न सलोने साथ सजें तो
दिल के तार स्वयं बजते हैं।

हैं आँखों से ओझल फिर भी
दिल के तार जुड़े रहते हैं।
कितने आंधी तूफ़ां आयें
हम चट्टान बने रहते हैं ।

जब मन्द मन्द मुस्काएं हम तो
दिल के तार स्वयं बजते हैं।

आओ प्यार का रूप सजाएँ
शाहजहां मुमताज बन जाएं ।
मर कर भी वो अमर है जैसे
हम भी ऐसा कुछ कर जाएं ।

तेरे मिलने की चाहत में
दिल के तार स्वयं बजते हैं।

क्या है मेरा क्या है तेरा
दुनियां आनी जानी है।
गले लगाले प्रियतम मेरे
जीवन बहता पानी है ।

प्यार भरे जज़्बातों संग तो
दिल के तार स्वयं बजते हैं।

सुलोचना परमार
देहरादून (उत्तराखण्ड)

डॉ महेश मधुकर

आज की वैश्विक महामारी "कोरोना" पर केंद्रित एक गीतिका:

इस परीक्षा की घड़ी में,धैर्य मत खोना।
हैं सजग तो कुछ नहीं,कर पाय कोरोना।

वस्तु कोई भी छुओ, तब मत करो आलस,
हाथ साबुन से रगड़कर,ख़ूब ही धोना।

हो न आवश्यक तो,घर से ही नहीं निकलें,
यदि न मानी बात,तो फिर पड़ेगा रोना।

संक्रमित दुर्भाग्य से,यदि हो गये तो फिर,
दिवस निर्धारित तलक,एकांत में होना।

भेंटना,मिलना,गले लगना,सभी छोड़ें,
मानकर अनुरोध,बन जाएं खरा सोना।

डॉ महेश मधुकर
बरेली (उ0प्र0)

सत्य पाल सिंह 'सजग'

प्रश्न कल किया

घुट-घुट के तेरी याद में हर एक पल जिया
उत्तर नहीं मिला जो हमने प्रश्न कल किया ।।
क्यों दिल दुखाया तुमने, कल फोन काटकर
उलझन को तुमने मेरी क्यों और बल दिया ?
उत्तर नहीं मिला जो हमने प्रश्न कल किया।।
उम्मीद - ए-वफा हमने तुमसे लगाई थी
मुझसे छुड़ा के हाथ वह आगे को चल दिया ।
उत्तर नहीं मिला जो हमने प्रश्न कल किया ।।
कातिल नजर तुम्हारी, बरछी से कम नहीं
कितने किए हैं घायल, किस किस को छल दिया ।
उत्तर नहीं मिला जो हमने प्रश्न कल किया ।।
उम्मीद के सहारे, जीते रहेंगे हम
प्रश्नावली को तुमने, जबतक न हल किया ।
उत्तर नहीं मिला जो हमने प्रश्न कल किया ।।
घुट - घुट के तेरी याद में, हर एक पल जिया
उत्तर नहीं मिला जो हमने प्रश्न कल किया ।।

सत्य पाल सिंह 'सजग'
लालकुआँ (नैनीताल), उत्तराखण्ड
सम्पर्क – 9412329561, 8171723018

आशा बाजपेयी 'संभवी'

जय भारत जय -जय हो भारत
कोरोना तब हारे भारत
एकजुट हो जाना है फिर
जनता कर्फ्यू मानना है
संकट की इस घडी में भारत
हम सब रक्षित होवे भारत
चलो सेनेटाइजर ले आवे
वायरस को दूर भगावे
नहीं समस्या एक देश की
विश्वव्यापी यह बला बनी
निज सुरक्षा के संग संग
सर्व हिताय भी करना है
लोक डाउन सुन नहीं दंग
उपहार शंख ध्वनि करना है

जय भारत...
जा कोरोना,भाग कोरोना
दीर्घ उपहार दे जाओ कोरोना
विश्वबन्धुत्व का ध्यान धरो
धर्म-कर्म का कुछ काम करो
इतिहास आज लिख जाएगा
भविष्य तुम्हे पुनःदोहराएगा
जाओ कोरोना, जाओ कोरोना
तुम विलुप्त हो जाओ कोरोना
है जागरूक अब बच्चा- बच्चा
अब तो तुम चले जाओ कोरोना
जय भारत जय जय हो भारत
कोरोना तब तुमसे हारे भारत

आशा बाजपेयी 'संभवी'
उत्तराखंड

राजीव 'प्रखर'

छुक-छुक गाड़ी

गाड़ी-गाड़ी खेल रहे हैं,
कॉलोनी के बच्चे सारे।
जैसे नभ में चमक रहे हों,
नन्हें-नन्हें चम-चम तारे।

इंजन असलम सीटी देकर,
पूरा रेला चला रहा है।
मोनी, रीता, जौनी डिब्बे,
बिन्दर झंडी हिला रहा है।
आनंदित हैं बड़े-बड़े भी,
देख-देख अचरज के मारे।
गाड़ी-गाड़ी खेल रहे हैं,
कॉलोनी के बच्चे सारे।

काम छोड़ कर अपना-अपना,
चाचा पंडित, ताऊ काजी।
डिब्बे बनकर इस प्यारी सी,
गाड़ी में लगने को राजी।
बच्चों में घुल-मिल कर देखो,
अब लगते हैं कितने प्यारे।
गाड़ी-गाड़ी खेल रहे हैं,
कॉलोनी के बच्चे सारे।

ज़ात-पात पर लड़ने वालो,
इस गाड़ी को चलते देखो।
इन नन्हें-नन्हें नैनों में,
मीठे सपने पलते देखो।
मनभावन यह धमा-चौकड़ी,
इससे मन का तम भी हारे।
गाड़ी-गाड़ी खेल रहे हैं,
कॉलोनी के बच्चे सारे।

राजीव 'प्रखर'
मुरादाबाद।

तुम सरल होते जाओ तो अच्छा लगे..!

ये बनावट हटाओ तो अच्छा लगे!
तुम सरल होते जाओ तो अच्छा लगे!

ये चकाचौंध अंधा न कर दे तुम्हें,
गांव में लौट आओ तो अच्छा लगे !

इन अंधेरों से अच्छी नहीं दोस्ती,
दिल में दीपक जलाओ तो अच्छा लगे!

फोन से ही कुशलक्षेम क्या पूछना !
तुम मिलो! घर भी आओ तो अच्छा लगे !

भागती - दौड़ती ज़िन्दगी से "शशी",
चार पल तुम चुराओ तो अच्छा लगे!

डॉ. शशि जोशी "शशी"

छाया सक्सेना प्रभु

समीक्षा

कोरोना को समर्पित दोहे
दोहाकार- आ. रामकिशोर वर्मा जी, जयपुर राजस्थान

आ. रामकिशोर वर्मा जी द्वारा रचित दोहे गागर में सागर भरते हुए कोरोना के फैलने का स्थान, कारण, बचने के उपाय व भारतीय संस्कृति के महत्व को बखूबी प्रस्तुत कर रहे हैं । व्यंग्यात्मक शैली में शब्दों की धार और भी पैनी हो जाती है । जब कोई बात प्रभावी तरीके से कहनी हो तो अक्सर हम लोकोक्ति, मुहावरे , विम्ब व प्रतीकों का उपयोग करते हैं जिससे कम शब्दों में गहरे अर्थ पाठकों तक संप्रेषित किये जा सकें ।

आप की लेखनी सदैव ही ऐसे विम्बों को सहजता के साथ अपनी रचना में प्रस्तुत करती है । जिससे यह उक्ति जो दोहे के लिए कही जाती है कि - देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर को पूरी तरह चरितार्थ करती है ।
कुछ पंक्तियाँ देखिए-
जन्म आपका चीन में, छाये सकल जहान
जनता का कर्फ्यू लगा, जनता का हित साध ।

पोलियो से बचने हेतु - जीवन की दो बूंद को अपनाकर हम सुरक्षित हो रहे थे तभी कोरोना का आना सब बरबाद कर देगा ऐसा लगता है इस भाव को इस दोहे में देखें-
कल ही तो पीकर चुके, जीवन की दो बूंद ।
अब कोरोना आनकर, सभी दिये हैं खूँद ।।५।।

इसी तरह नूर और दूर का सुंदर प्रयोग इस दोहे में देखिए -
हाथ जोड़ कर ही मिलें, बना रहेगा नूर ।
अगर हाथ साबुन धुले, कोरोना हो दूर ।। ७।।

अपनी बात को समाप्त करते हुए बहुत ही सधे हुए अंदाज में आपने लिखा है -
भूल गये हम बात जो, वह है बहुत महान ।
घर-घर में अब यज्ञ हो, हो सकता कल्याण।। ८।।

आप की रचनाएँ सदैव ही जनकल्याण की भावना से प्रेरित होकर लिखी जाती हैं । भावों और शब्दों का सुंदर सामंजस्य , शिल्प का पालन, लेखन की सार्थकता सभी रचनाओं से झलकती है । ऐसे ही कल्याणकारी सृजन करते रहें ।

समीक्षक
छाया सक्सेना प्रभु

गीत - जनता कर्फ्यू का इतवार
गीतकार- आ. रवि प्रकाश जी ,रामपुर उत्तर प्रदेश

आ. रवि प्रकाश जी द्वारा समसामयिक समस्या पर रचित यह गीत जहाँ एक ओर कोरोना से बचने के उपाय बता रहा है तो दूसरी ओर जनता कर्फ्यू को किस तरह से उपयोगी बनाएँ ये भी समझा रहा है ।

शब्दों व भावों का सामंजस्य बहुत ही खूबसूरती के साथ किया गया है । गीत विधा के शिल्प का पालन, सहज व सरल तुकांत, गेयता पूर्ण सृजन होने से आसानी से गुनगुना सकते हैं । संदेशप्रद सृजन सरल भाषा में होने का लाभ यह रहता है कि ये जनमानस के लिए न सिर्फ उपयोगी होते हैं वरन वे इसे अपने मन में रचा- बसा लेते हैं ।

वास्तव में इसे ही छुट्टी का इतवार कहा जाना चाहिए जब सब कार्यों को छोड़ केवल सेहत, मनोरंजन व आपसी विचार विमर्श पर ही घर के सभी सदस्यों का चिंतन व चर्चा हो ।

पहले अंतरे की इस पंक्ति का सौंदर्य देखिए - *घर की जिंदाबाद रसोई रोटी दाल बनाना ।*

इस पंक्ति के माध्यम से रचयिता ने गृहणी के प्रति भी धन्यवाद व्यक्त किया है कि जब सारे घर द्वार बंद हैं तब भी रसोई घर खुला हुआ है और वहाँ अपने पन का भोजन बन रहा है ; जिसका सम्मान सभी को करना चाहिए ।

इसी प्रकार दूसरे अंतरे में जनता कर्फ्यू के दौरान आपसी प्रेमभाव को और निखारे इस ओर भी आ. रवि प्रकाश जी ने सबका ध्यान केंद्रित किया है - *कुछ गपशप कुछ घर के भीतर कामों को निपटाएँ*

साथ ही साथ वे इस समस्या से निपटने हेतु जो भी सेनानी तन मन से लगे हुए हैं उनको भी धन्यवाद देना नहीं भूलते हैं ।

बहुत सुंदर, प्रेरक गीत । आप के काव्य सृजन हमेशा ही गेयता व सुंदर भावों से युक्त होते हैं जिनसे अवश्य ही पाठक लाभान्वित होते हैं ।

समीक्षक
छाया सक्सेना प्रभु
जबलपुर (म.प्र.)
7024285788

पुष्पा जोशी 'प्राकाम्य'

समीक्षा

काव्यकारों की प्रणम्य लेखनी से विभूषित,खूबसूरत आवरण से सुशोभित काव्य संकलन " २१वीं सदी की काव्यधारा", सभी के दिलों को छू रहा है। संकलन परमश्रद्धेय गुरु जी के कुशल नेतृत्व व संपादन में श्री शोभित गुप्ता जी, रागिनी गर्ग जी, श्री राम किशोर वर्मा जी के अथक परिश्रम व समर्पण से हमारे समक्ष है। सम्पादकीय में बताया गया है कि काव्यशास्त्रियों ने काव्य को ईश्वर का ही पर्याय बताया है, तर्कसंगत लगता है। निश्चित ही भावों के सागर में गोते लगाते हुए रचित रचनाएं, ईश्वर के सानिध्य-सी ही आनन्दानुभूति की प्रतीति करातीं हैं। " रसौ वै स:" अथवा "ब्रह्मानन्द सहोदर" जैसी कथित उक्तियां निश्चित रूप से हमारी सुपोषित संस्कृति व संस्कार ही हैं। श्रद्धेय गुरुवर का,रचनाकारों से आह्वान कि काव्य में शास्वत मूल्यों की पुनर्स्थापना की जाए जिससे साहित्य तो युगीन होगा ही,साथ ही हमारे मृतप्राय से होते जा रहे संस्कार भी पुनर्जीवित हो उठेंगे। सत्यम है। जिससे निश्चित रूप से भारत पुनः अपनी मर्यादित,उत्कृष्ट संस्कृति व संस्कारों का परचम विश्वपटल पर लहराएगा। साथ ही काव्यकारों को भी अपने काव्य की रसानुभूति के साथ-साथ गौरवानुभूति भी होगी। सम्पादक महोदय का रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करना भी रचनाकारों का मनोबल बढ़ाता है।

अनवरत संकलनों के प्रकाशन के सुखद अभियान की सफल दीर्घ यात्रा के लिए हम हृदय की अनन्त गहराइयों से आदरणीय गुरूजी को असीम शुभकामनाएं प्रेषित कर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। साथ ही हमारे परमश्रद्धेय पथ-प्रदर्शक गुरु जी के स्वस्थ सुखी व दीर्घायु जीवन की सदैव ईश्वर से प्रार्थना के साथ उनकी लेखनी और उनके जनहित को समर्पित अभियान के विश्वकीर्तिमान स्थापित करने की भी ईश्वर से कामना व प्रार्थना करते हैं।

प्रस्तुत संकलन में सभी सम्मानित काव्यकारों की रचनाएं खूबसूरती के साथ लय व शिल्पबद्ध हैं। जिनकी गेयता हृदय को असीम आनन्द की रसानुभूति करा रहीं हैं। सभी सम्मानित काव्यकारों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

सबका तो सम्भव नहीं है पर विनम्र निवेदन के साथ कुछ वरिष्ठ आदरणीय साहित्यकारों की पंक्तियां उद्धृत करना चाहुंगी।-----

आदरणीय सुरेश अधीर जी-----

एकहिं रात गहे क्षुदिराम जू नीदहिं गोद थके बहुनाना।
नूतन लोक परे पल एकहिं,लौकिन ज्ञान भयो विलगाना।।

लेकिन एक महाछवि सुंदर, सुंदर भाव रही मुस्काना।।
कौन अधीर करें असि वर्णन,कोटिक रूपन काम लजाना।।

आदरणीय विरेन्द्र सरल जी-----
आदि से विश्वास ले,
अन्त के उच्छवास में
स्वप्न-तरियों से प्रवाहित
मध्य अर्णव-वास में।
हर लहर पर अग्रणी,
करके भरोसा
शून्य हत्था, ढलते रहे
कब से न जाने।

आदरणीय आशा शैली जी-----
भारत भू पर ले रहे,विविध रूप धर देह।
मेरे राम कृपालु हैं,करते सब से नेह।।

आदरणीय पुष्पा शर्मा जी----
दूषित जल अरु वायु है,बढ़ा भूमि पर भार।
पावन अन्न मिले नहीं,करते सभी पुकार।।

आदरणीय गुरूजी जितेंद्र कमल आनन्द सक्सेना जी------
वरो गुणों को,
सत्पथ पर चल,
सबसे प्यार करो।

स्व.श्रीमती शोभा आनन्द सक्सेना जी-----
हो प्रथम प्रस्थान मेरा,संग नहीं आना प्रियवर।
हम चले जाएं जहां से,तुम नहीं जाना प्रियवर।

आदरणीय महेश मधुकर जी-----
निज पावन ज्ञान विधान लिए,
जनजीवन को वरदान लगी।
समता लख लेखन-वाचन में,
इसकी गति एक समान लगी।
सुखदा,वरदा मनभावन जो,
मृदुहास भरा यशगान लगी।
कवि सूर रचे पद भक्ति भरे,
तुलसी,कबिरा, रसखान लगी।

आदरणीय प्रमेशलता पाण्डेय जी-----
फूलों जैसी थी जो नीरस,एक कहानी हो गयी।
निष्ठुर क्रूर समय की कैसी,ये मनमानी हो गयी।

आदरणीय राकेश सक्सेना जी-----
मुझको जब भी याद आती है, मिट्टी मेरे गाँव की।
माँ की याद दिला जाती है मिट्टी मेरे गाँव की।

आदरणीय अशोक विश्नोई जी-----
कलमकार
जगाता है देश को,
करें उद्धार गुलाम कौन,
जानते हम सभी
फिर भी मौन।

सभी रचनाकारों की रचनाएँ जहाँ कहीं दिल को झकझोर रहीं तो कहीं ह्रास होते मानव मूल्यों पर प्रश्नचिन्ह लगा रहीं हैं, कहीं ईश्वर के सानिध्य का आभास करा रहीं हैं तो कहीं वीरता में भरी हुंकार भर रहीं हैं। कहीं श्रृंगार रस की रसानुभूति करातीं अनवरत संकलन की अनमोल रचनाओं को अविराम गाने-गुनगुनाते रहने को आकर्षित कर रही है। पुनः पुनः काव्यधारा परिवार को प्रस्तुत उत्कृष्ट संकलन की हार्दिक बधाई व मंगलमय शुभकामनाएं।

पुष्पा जोशी 'प्राकाम्य'
शक्तिफार्म, सितारगंज

हेमा

अब करना है क्या सही,
समय तराजू तोल।
होशियार होता नहीं,
जोखिम ले जो मोल।

हेमा

जब आहट हो मौत की,
रही द्वार खटकाय।
भेदभाव हर भूल के,
बढ़ें सभी समुदाय।

हेमा

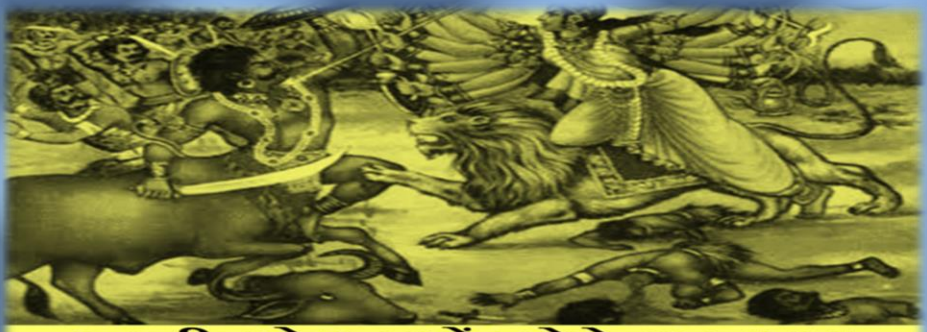

रक्तबीज के रूप में, कोरोना का वार
लेंगी माँ नवरात में,फिर देखो अवतार
ताली घण्टा शंख से, पावन हुआ जहान
महाअसुर का देखना, फिर होगा संहार

डॉ अर्चना गुप्ता
मुरादाबाद

फैली आज महामारी है

आज बना कितना दुखदायी, हाय वायरस अब कोरोना
जिनको इससे हुआ संक्रमण, उन्हें देख आता है रोना।
फैली आज महामारी है, अफ़रातफ़री भी जारी है
होती ऐसी दुर्घटनाएं, जिनसे मानवता हारी है
मजबूरी का लाभ उठाने की भी इतनी तैयारी है
तिकड़मबाजी के कारण ही, बनी समस्या यह भारी है
कुछ नेताओं ने भी सीखा, फ़सल जहर की ऐसी बोना
बेबी डॉल सुनेंगे गाना, कैसे सम्भव अवसर खोना।
अनुमति बिना हुआ सम्मेलन, पर उपदेश कुशल बहुतेरे
जनता को क्या सीख मिलेगी, बगुला भगत किसलिए घेरे
हम तो अब खुद ही जागे हैं, नहीं करेंगे तेरे मेरे
उसके लिए समर्पित सब कुछ, जो श्रद्धा से हमको हेरे
जीवन खतरे से बच जाए, ऐसे अब हाथों को धोना
और रहें एकान्तवास में, चुन लें घर का कोई कोना।
महंगाई के सुरसा जैसे, मुंह ने निगल लिया हो जिसको
उसके घर पर क्या बीतेगी, चिन्ता हुई यहां अब किसको
जिसके घर पर जला न चूल्हा, देखें आज तड़पता उसको
दूध मलाई खाने वाले, कहते हैं मानवता इसको
छुट्टी में कुछ मौज मनाएं, धन-दौलत का खेल सलोना
जिनके बच्चे भूखे प्यासे, उनपर वज्रपात ही होना।

-रचनाकार उपमेन्द्र सक्सेना एड.,

अखिलेश वर्मा

माँ

ज़िंदगी है माँ सभी की और ये संसार माँ
प्यार है दुनिया में ग़र तो प्यार का आधार माँ ।

चक्की चूल्हा भाईयों ने कर लिया अपना अलग
पर उसी चक्की में गेहूँ सी पिसी हर बार माँ ।

माँ ने ही परिवार की बगिया सजाई इस तरह
फूल है बच्चों की ख़ातिर दुश्मनों को ख़ार माँ ।

जब कभी होता परेशां हाथ सर पर फेरती
जान लेती हाल दिल का देख के इक बार माँ ।

सब बिखर जाएँ न चाचा ताऊ भाई और बहन
रक्खे सबको जोड़कर जो ऐसा है किरदार माँ ।

- अखिलेश वर्मा
मुरादाबाद

खूबसूरत हसीं नज़ारे थे
आप जब साथ थे, हमारे थे
सज रहे थे विवाह वेदी पर
ख्वाब अपने सभी कुंवारे थे
दिल था.. इक मदरसा
मुहब्बत का
लब... तेरे इश्क के इदारे थे
मेरी आंखों में रतजगे तेरे
तेरी आंखों में चांद तारे थे
एक "मासूम" दिल था अदना
सा
दिल में अरमान खूब सारे थे
मोनिका "मासूम"

ग़ज़ल

मुझे इस जिंदगी मे बस खुदा का ही सहारा है|
उसी ने नाव को मेरी तलातुम से उबारा है|

किसी की याद मे अब तक बहे जो आंख से आँसू,
उन्ही अश्को से ही सागर का पानी आज खारा है|

मुहब्बत ऐसा दरिया है कि जिसका छोर मत पूछो
जो इसमें डूबता है वो नहीं पाता किनारा है|

मुझे आने लगी है हिचकियां बढ़ने लगी धड़कन,
कहीं माज़ी के लम्हों ने मुझे दिल से पुकारा है|

जुदाई मे तिरी हम रोज ही मरते रहे घुटकर,
बताऊँ क्या कि कैसे वक्त यह हमने गुजारा है|

कभी हँसते, कभी रोते , कभी जैसे हुए पागल,
लगाया है गले खुद को, कभी खुद को नकारा है|

इसी उलझन को सुलझाने में मैं नाकाम हूँ अब तक
मुझे उस बेवफा ने क्यूँ किया हँसकर इशारा है|

–विकल बहराइची

अखिल भारतीय काव्यधारा के रचनाकारों के छायाचित्र

जितेन्द्र कमल आनंद

पुष्पा जोशी 'प्राकाम्य'

रामकिशोर वर्मा

रागिनी गर्ग

डॉ महेश मधुकर

राजीव 'प्रखर'

छाया सक्सेना प्रभु

राजबाला धैर्य

आनंद पाठक

राकेश कुमार मिश्रा

रवि रश्मि 'अनुभूति '

हरीश बिष्ट

पुष्पाशर्मा "कुसुम"

डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल'

डा. मीना कौशल 'प्रियदर्शिनी'

मीनाक्षी ठाकुर

डॉ शेषपालसिंह 'शेष'

मोनिका "मासूम"

डॉ राकेश चक्र

कृष्णलता (कृष्णा)

डॉ. बी. के. चन्द्रसखी

नयना कक्कड़ कपूर

डॉ रीता सिंह

सुबोध कुमार शर्मा शेरकोटी

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

डॉ. अरविंद "धवल"

रूचिका राय

विकल बहराइची

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

सुलोचना परमार उत्तरांचली

सत्य पाल सिंह 'सजग'

आशा बाजपेयी 'संभवी'

हेमा

उपमेन्द्र सक्सेना

अखिलेश वर्मा

शोभित

आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा

मंगल भवन, साईं मंदिर के पास,

साईं विहार कॉलोनी

रामपुर-244901, उत्तर प्रदेश

7017711018

धरती पर भगवान

चित्रः पावनी कपूर

आध्यात्मिक साहित्यिक संस्था काव्यधारा

मंगल भवन, साईं मंदिर के पास,

साईं विहार कॉलोनी

रामपुर-244901, उत्तर प्रदेश

7017711018